मुंबई बम विस्फोट और विवादित बयान

तू धन्य है ऐ गृह मंत्री चिदंबरम!

डॉ. एम.एन. बुच

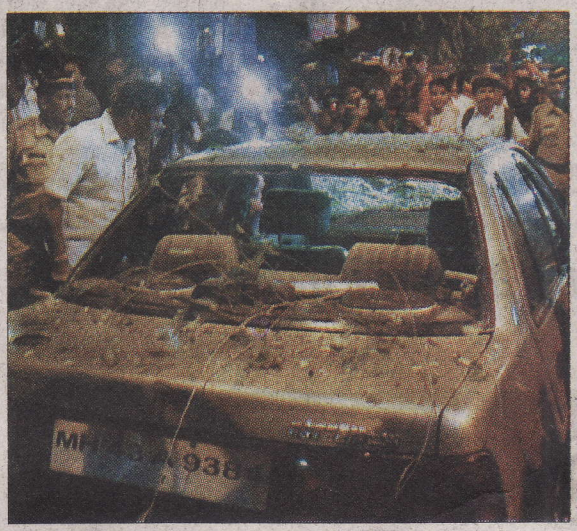

> आतंकी हमले केवल सुरक्षा उपायों से नहीं रोके जा सकते क्योंकि यदि आपने एक स्थान की सुरक्षा पुख्ता की तो वे किसी अन्य स्थान पर हमला करेंगे।

चाक चौबंद सुरक्षा के बावजूद दिनांक 13 जुलाई 2011 को मुंबई शहर में तीन भीड़ भरे स्थानों पर आतंकवादियों ने विस्फोट किए जिनमें लगभग बीस व्यक्तियों की मृत्यु हुई और लगभग 150 लोग घायल हुए। इनमें से कुछ की स्थिति अभी भी गंभीर है। लगभग दस मिनिट के अंतराल में श्रृंखलाबद्ध तीन भयंकर बम विस्फोटों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मुंबई में दहशत फैलाने के लिए किसी एक ही विचारधारा के समूह ने योजनाबद्ध तरीके से यह कार्रवाई की। ये आकस्मिक विस्फोट नहीं थे। विश्व भर में, जिसमें पाकिस्तान भी सम्मिलित है, इन विस्फोटों की निंदा की गई और कुछ देशों ने, जिनमें अमेरिका और ब्रिटेन शामिल हैं, भारत की मदद की पेशकश भी की है परंतु आश्चर्य की बात यह है कि हमारे नेताओं ने, विशेषकर केन्द्र के सत्ताधारी दल के नेताओं ने कुछ ऐसे बयान दिए हैं जो उनकी नासमझी और मूर्खता का प्रतीक हैं। गृह मंत्री श्री चिदंबरम ने यह कहा है कि उन्होंने मुंबई को इस प्रकार के हादसे से 31 माह तक बचाए रखा। उनकी इस देशसेवा के लिए क्या उन्हें भारत रत्न से नवाजा जाए? गृहमंत्री का कर्तव्य है कि वह ऐसी सुरक्षा व्यवस्था करें, सुरक्षा का ऐसा वातावरण निर्मित करें जिसमें किसी भी आतंकवादी की हिम्मत ही न हो कि वह भारत पर आतंकी हमले करे। 31 महीने तक उन्हें बचाने के लिए मुंबई वासियों को एक बड़ा समारोह आयोजित कर श्री चिदंबरम का नागरिक अभिनंदन करना चाहिए! आखिरकार उनकी मेहनत की वजह से ही मुंबई के नागरिकों को तीन वर्ष और सात माह की राहत मिली जिस दौरान उन्हें बम विस्फोटों का सामना नहीं करना पड़ा। विचार कीजिए, कितनी बड़ी उपलब्धि है यह हमारे गृहमंत्री की। कितना बड़ा वरदान उन्होंने मुंबई वासियों को दिया है। वे इतने सक्रिय न होते तो शायद 30 माह में ही बम विस्फोट हो जाता। ऐसा गृहमंत्री आज भी मंत्रिपरिषद का सदस्य है और वह भी ऐसे पद पर जिसमें उसके कोमल हाथों में देश की सुरक्षा की जिम्मेदारी है।

दूसरा बयान है एक राजकुमार का जो उस परिवार का उत्तराधिकारी है जिसको भगवान ने वरदान दिया है कि उसी परिवार को देश का नेतृत्व करने का अधिकार है और इसलिए वह प्रधानमंत्री बनेगा। राहुल गांधी का बयान है कि विस्फोट तो अफगानिस्तान और ईराक में भी होते हैं, अर्थात मुंबई किस खेत की मूली है जिसको आतंकी विस्फोटों का लाभ न मिले। सोने पर सुहागा तो यह है कि उनके जो प्रमुख राजनैतिक गुरू और संरक्षक हैं, श्री दिग्विजय सिंह, उन्होंने कहा है कि पाकिस्तान में तो आए दिन विस्फोट होते हैं। इनका यह कहने का अर्थ क्या है? जो मुंबई में मारे गए या घायल हुए वे क्या इस कारण पुनः जीवित या स्वस्थ हो जाएंगे कि पाकिस्तान में विस्फोट होते हैं? क्या उनके कथन का अर्थ यह है कि चूंकि पाकिस्तान में विस्फोट होते हैं इसलिए मुंबई के मृतक शहीद माने जाएंगे जिन्हें अल्लाताला पाक योमे कयामत का इंतजार किए बगैर जन्नत बख्शेंगे?

आतंकी हमले केवल सुरक्षा उपायों से नहीं रोके जा सकते क्योंकि यदि आपने एक स्थान की सुरक्षा पुख्ता की तो वे किसी अन्य स्थान पर हमला करेंगे। मुंबई में विस्फोट हों और भोपाल में पुलिस द्वारा न्यू मार्केट में खड़े वाहनों की जांच की जाए उससे आतंकी हमले नहीं रुकेंगे। बार-बार अखबारों में यह छपवाकर की पुलिस ने रेड अलर्ट घोषित किया है आतंकी हमले नहीं रुकेंगे। अमेरिकी राष्ट्रपति यदि 11 सितम्बर 2001 के बाद केवल बयानबाजी करते रहते तो अमेरिका पर भी आतंकी हमले होते रहते। चूंकि अमेरिका ने दृढ़ संकल्प किया कि विश्व का कोई भी कोना नहीं है जहां आतंकी छिप सकें और फिर उन्होंने आतंकियों पर सतत प्रहार किए, इस कारण अमेरिका की भूमि पर आतंकी हमले नहीं होते। वहां सुरक्षा की व्यवस्था तो बढ़ाई ही गई है परंतु साथ ही आक्रामक कार्रवाई भी की गई है। मैं ईराक और अफगानिस्तान के युद्ध की सराहना नहीं करता, परंतु ओसामा बिन लादेन को जिस प्रकार से एबटाबाद में मार दिया गया उसे आतंकवाद की जवाबी प्रतिक्रिया का आदर्श उदाहरण समझता हूं। आतंकवादी हमले तभी रुकेंगे जब उनके पीछे जो ताकते हैं उन्हें यह सबक सिखाया जाएगा कि भारत उनकी खोज करके उन पर हमला करेगा और उन्हें समाप्त करेगा।

मुझे मालूम है कि पिछले कई वर्षों से हमारी तीनों सेनाओं को उन हथियारों से वंचित रखा गया है जिनके माध्यम से वे शक्तिशाली हों और हमारे दुश्मनों पर अपना वर्चस्व कायम कर सकें। इसके लिए तो शासक दल ही दोषी माना जाएगा न? मुझे यह भी मालूम है कि पाकिस्तान के पास परमाणु हथियार हैं, जिन्हें वह तेजी से बढ़ा रहा है। यदि हमारी सेनाओं को परमाणु हथियारों से लेस नहीं किया गया तो इसका दोष भी तो शासन को ही दिया जाएगा न? हम हमेशा पाकिस्तान के परमाणु अस्त्रों से भयभीत रहते हैं। पाकिस्तान हमारी परमाणु शक्ति से भयभीत क्यों नहीं हैं? हमारी सेनाओं की क्षमता हमने ऐसी क्यों नहीं बनाई जो एक परमाणु पर्यावरण में भी पाकिस्तानी सेना को शीघ्रातिशीघ्र ध्वस्त कर सके? जब तक शासन में शासन करने की इच्छाशक्ति नहीं होगी, आतंकवादियों के ठिकानों में घुसकर उन पर हमला नहीं किया जाएगा, हमारे दुश्मनों को हम यह अहसास नहीं दिला देंगे कि हम उन्हें खंडित कर सकते हैं तब तक भारत पर आतंकी हमले होते रहेंगे। मेरा शासन से अनुरोध है कि इच्छाशक्ति बढ़ाओ, सेनाओं को मजबूत करो, अपने दिल से भय को मिटाओ और दुश्मनों को ऐसा मुंहतोड़ जवाब दो कि वे हम पर हमला करने से सदा के लिए घबराएं। जब तक यह नहीं होता तब तक कृपया हमारे गृहमंत्री, राहुल गांधी, दिग्विजय सिंह इत्यादि मुंह पर पट्टी बांधकर मौनव्रत धारण करें। इसी में देश का भला है।

(लेखक पूर्व प्रशासकीय अधिकारी हैं)